2 अक्टूबर 2015, कुल पृष्ठ : 4, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 13 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 18 से 27 सितम्बर, 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण धर्म विधान के उपरान्त डॉ. श्रीयांसजी सिंघई द्वारा समयसार पर प्रवचन, दोपहर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा योगसार विषय पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व श्रीमती ज्योति सेठी द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा, उपाध्याय वरिष्ठ के छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचन एवं रात्रि में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के तृतीय अध्याय पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

इसके अतिरिक्त निबंध प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, चारगति के दु:ख विषय पर नाटक आदि कार्यक्रम भी हुये।

विधि-विधान के कार्य पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने उपाध्याय वरिष्ठ के छात्रों (रजत जैन व प्रांजल जैन) के सहयोग से संपन्न कराये।

जनता कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतापनगर सेक्टर 17 स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित मनीषजी कहान द्वारा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

दुर्गापुरा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में डॉ. भागचन्दजी शास्त्री द्वारा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

जगतपुरा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

जौहरी बाजार स्थित घी वालों के रास्ते में श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में प्रात:काल पण्डित प्रमोदजी शास्त्री द्वारा समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

(2) इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर रामाशा मन्दिर में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रात: द्रव्यसंग्रह पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक व दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विदुषी प्रतीति पाटील जयपुर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

ओम विहार स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर में विदुषी प्रतीति पाटील जयपुर द्वारा प्रात: दशलक्षण धर्म पर एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। सायंकाल पण्डित निकुंजजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा बालकक्षा ली गई।

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वीतराग-विज्ञान भवन में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में वर्तमान में जीवदया पालन विषय पर तथा सायंकाल अध्यात्मधाम ऋषभायतन में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सीमंधर जिनालय में पण्डित निखिलजी शास्त्री मेरठ द्वारा एवं ऋषभायतन में पण्डित अभयजी जैन ग्वालियर द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान कराया गया। ऋषभायतन में रात्रि प्रवचन के उपरान्त महिला मण्डल के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **- नरेश जैन लुहाड़िया**

(4) बैंगलोर : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:काल मंगलार्थी संदीप जैन बैंगलोर द्वारा दशलक्षण मंडल विधान कराया गया। **- रमेश भंडारी**

धूपदशमी पर आकर्षक झांकी

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 23 सितम्बर को धूपदशमी के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर शाखा एवं श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में **'समाधि एवं सल्लेखना'** विषय पर अत्यंत सुन्दर व सजीव झांकी का आयोजन किया गया।

झांकी के उद्घाटन के अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री राजेन्द्रजी गोधा, श्री गणेशजी राणा, श्री गौरव जैन दक्ष प्रकाशनवाले, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ एवं उपाध्याय वरिष्ठ के विद्यार्थियों ने अपने आकर्षक अभिनय द्वारा समाधि एवं सल्लेखना का वास्तविक स्वरूप बताया, जिसे लगभग 1500 लोगों ने सराहा। **- जिनकुमार शास्त्री**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 अक्टूबर	जयपुर (टोडरमलजी मंदिर)	ताम्रपत्र- मोक्षमार्गप्रकाशक विमोचन
18 से 27 अक्टूबर	जयपुर (टोड. स्मारक भवन)	शिक्षण शिविर
31 अक्टू. व 1 नव.	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
8 से 12 नवम्बर	देवलाली-नासिक (महा.)	भ.महावीर निर्वाणोत्सव
18 से 25 नवम्बर	जयपुर (टोड. स्मारक भवन)	सिद्धचक्र मण्डल विधान
25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
30 व 31 जनवरी 2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 12 जुलाई को **'हमारे पूज्य नवदेवता'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में जितेन्द्र जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं विजय जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण सहज जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सौरभ फूप एवं अच्युतकांत जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 19 जुलाई को **'आओ जाने आत्म को'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अंकित जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं प्रतीक जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण विनय जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन उपाध्याय वरिष्ठ के सौमिल जैन एवं अमन जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 26 जुलाई को **'कर लो सिद्धों का गुणगान'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्री आर.के. जैन मुम्बई थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अक्षय जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं अच्युतकांत जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण वीकेश जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के ऋषभ जैन मौ एवं सौरभ जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

(4) दिनांक 23 अगस्त को **'जिनागम के आलोक में ध्यान'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पीयूष जैन (उपाध्याय वरिष्ठ), संयम शाह (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं अमित जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण अरिहंत जैन ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अनुभव जैन एवं मनीष जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

(5) दिनांक 30 अगस्त को **'अमृत महोत्सव : समाधि-सल्लेखना'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवालों ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल मंचासीन थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में ममित जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं वीतराग वसवाडे (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। निर्णायक के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे।

गोष्ठी का मंगलाचरण मयंक जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के निवेश जैन एवं जितेन्द्र जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

(6) दिनांक 6 सितम्बर को **'कर लो जिनवर का गुणगान'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में नयन जैन (उपाध्याय कनिष्ठ), विशाल जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण नितिन जैन ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अनुभव जैन एवं मनीष जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन अच्युतकांत जैन एवं सौरभ जैन फूप ने किया।

सम्पादकीय -

सत्साहित्य की उपयोगिता

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि एक कार्य की निष्पत्ति में अनेक कारण मिलते हैं, और उनमें व्यक्ति का अपना पुरुषार्थ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, किन्तु अन्य कारणों में निमित्त कारण भी विस्मृत करने योग्य नहीं है; क्योंकि सज्जन पुरुष दूसरों के द्वारा किये गये उपकारों को भी कभी नहीं भूलते।

विज्ञान भी भला अपने उपकार को कैसे भूल सकता था, जिनसे उसे सन्मार्ग मिला था? अत: उसने सभी सहयोगियों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करते हुये इस अवसर पर अपने स्वर्गीय दादाश्री को विशेषरूप से स्मरण किया।

उसने कहा - ''मुझे बार-बार एक विचार यह भी आता है कि यदि हमारे घर में मेरे पूज्य दादाश्री द्वारा संग्रहीत वह सत्साहित्य नहीं होता और उनके श्रीमुख से मुझे बाल्यकाल में वे पौराणिक कथा-कहानियाँ सुनने को नहीं मिली होती तो मेरा क्या होता ?

धन्य है वह साहित्य, जिसे पढकर और स्मरण कर मुझमें यह असाधारण परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है और धन्य हैं वे प्रात: स्मरणीय दादाश्री, जिन्होंने यह सत्साहित्य जुटाया और मुझे जैनधर्म की कहानियाँ सुना-सुनाकर सन्मार्ग पर आने के संस्कार डाले।

एक दिन रात्रि में विज्ञान बिस्तर पर पड़े-पड़े सोच रहा था - ''काश ! ऐसे ही कोई कारण पाकर मेरे मित्र संजू, राजू और उनके साथी भी सन्मार्ग पर आ जावें। एतदर्थ भी कुछ प्रयास करना चाहिये। भले ही इसमें मुझे सर्वस्व समर्पण ही क्यों न करना पड़े।''

- यह सोचते-सोचते विज्ञान विचारों में खो गया और निद्रा देवी ने उसे अपनी गोद में समेट लिया और वह सो गया। **(क्रमश:)**

2 अक्टूबर 2015, मूल्य 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आत्मकल्याण के लिये उपयुक्त जीवन शैली श्रावकाचार : जैन जीवनशैली

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

इस आलेख का कथ्य –

जैन श्रावकों को अपने इस जीवन में मात्र इसी जीवन के भरणपोषण का कार्य नहीं करना है वरन अनादि-अनन्त इस आत्मा के अनंतकाल तक के लिये सुखी होने का उपक्रम भी इसी जीवन में करना है।

वे लोग जो आत्मा की स्वतंत्र सत्ता और उसकी अनादि अनन्तता को स्वीकार नहीं करते हैं उनके लिये तो इस जीवन में अन्य कोई लक्ष्य है ही नहीं, सिवाय इसके कि किसी भी प्रकार यह जीवन सुखसुविधापूर्वक व्यतीत हो जाये, बस इसीलिये वे तो जीवनभर, दिन-रात मात्र अनुकूल संयोग और प्रचुर भोगसामग्री जुटाने और भोगने में व्यस्त रहते हैं।

यह तो हम जानते हैं कि हमारी तत्कालीन आवश्यकताओं और त्रैकालिक हितों में मूलभूत अंतर होता है।

आप ही विचार कीजिये कि एक तत्कालीन हितों के अभिलाषी और एक अपने त्रैकालिक अविनाशी कल्याण की भावना वाले साधक की जीवनशैली एक समान कैसे हो सकती है ? उसमें मूलभूत अंतर होना ही चाहिये।

जैन दर्शन और अन्य दर्शनों में एक बहुत बड़ा अन्तर यह है कि अन्य दर्शनों में भगवान अलग होते हैं और बन्दे अलग।

उनके अनुसार भगवान सदा से भगवान थे और सदा भगवान रहेंगे भी व सामान्य संसारी जीव सदा संसारी ही रहेंगे।

संसारी जीव अपने भले-बुरे के लिये सदा भगवान की कृपा पर ही निर्भर रहेंगे।

भगवान संसारी लोगों के शुभ-अशुभ कर्मों के अनुरूप उन्हें फल प्रदान करेंगे और **समय-समय पर यदि भगवद् कृपा मिल जाये तो इसका अपवाद भी संभव है। संभव है कि आपके दुष्कर्म माफ कर दिये जायँ और आपको शुभ फल ही मिले।**

यहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि कोई संसारी जीव शुभकर्म करे या अशुभकर्म, इसका नियंता कौन है ?

यदि वह जीव स्वयं है तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि उस पर पूरी तरह भगवान का नियंत्रण नहीं है। तब भगवान सर्वशक्तिमान कैसे हुआ, जगत पर उसका सम्पूर्ण नियंत्रण कहाँ रहा ?

यदि यह सब (संसारी जीवों के शुभ-अशुभ कर्म) भगवान ही करवाते हैं तो फिर उन दुष्कर्मों का दुष्फल उन भोले, विवश संसारियों को क्यों?

यह तो अन्याय हुआ न कि पहिले वही दुष्कर्म करवाये और फिर वही उन्हीं दुष्कर्मों के लिये दण्डित भी करे।

यह तो ऐसे हुआ कि ''चोर से कहे चोरी कर और कोतवाल से कहे दंड दे।''

यदि कोई सर्वशक्तिमान भगवान जगत का कर्ता-धर्ता है तो ऐसी अनीति तो संभव है नहीं।

खैर ....

हमें बात तो दूसरी करनी थी।

जैनदर्शन में प्रत्येक आत्मा शक्तिरूप से परमात्मा है अपना स्वरूप पहिचानकर उसी में स्थित होकर पर्याय (वर्तमान) में भी परमात्मा बन सकता है।

जो आज परमात्मा हैं वे भी पहिले हमारे समान ही संसारी थे जो कि उक्त विधि से ही परमात्मा बने हैं।

यहाँ **प्रत्येक आत्मा अपने आपमें (स्वयं के लिये) सर्वशक्तिमान है, सर्वगुण और वैभव सम्पन्न है परन्तु पर के लिये वह कुछ नहीं। उसका अन्य द्रव्यों (जीव-पुद्गलों इत्यादि) पर कोई नियंत्रण नहीं। इसीप्रकार किसी परद्रव्य का हममें भी कोई दखल नहीं, उनका व हमारा परिणमन स्वतंत्र है, कोई किसी के आधीन नहीं।**

इसप्रकार निष्कर्ष यह है कि जहाँ अन्य दर्शनों में संसारी जीवों के सामने अन्य कोई लक्ष्य नहीं है, सिवाय इसके कि **प्रभुकृपा से उनका यह जीवन भौतिक सुख-शान्तिपूर्वक, अनुकूल संयोगों के बीच वैभवशाली शैली में व्यतीत हो जाये।**

यदि वे यह कर पाए तो उनका यह जीवन सफल हो गया अन्यथा निष्फल गया, बस ! इसीलिये उनके लिये तो यही उचित है कि जीवनभर धंधे-व्यापार में सक्रिय बने रहकर अधिकतम धनोपार्जन करें और उसका उपभोग करें, उपयुक्त उपभोग करें। कथित रूप से सुखी जीवन व्यतीत करें और अंतत: ब्रह्मलीन हो जायें।

उक्त के विपरीत जैन श्रावक यदि आत्मा से परमात्मा नहीं बन सके या परमात्मा बनने के मार्ग पर आगे नहीं बढ सके तो उनका जीवन समान रूप से निष्फल ही है, फिर चाहे वह चक्रवर्ती के वैभव के बीच लौकिक रूप से (भौतिक रूप से) अत्यंत सफल रहकर बीते या किसी भी प्रकार की लौकिक उपलब्धि रहित, दरिद्री रहकर बीते। दोनों ही प्रकार के जीवन में कोई फर्क नहीं है; क्योंकि अंतत: वह रहा तो संसार का संसार में ही, मुक्त तो हुआ नहीं।

रहा तो पामर ही, परमात्मा तो बना नहीं।

चाहे वैभवशाली रहे या दरिद्री, रहा तो संसार में ही न ! मुक्त तो हुआ नहीं।

कैद प्रथम श्रेणी की हो या तृतीय श्रेणी की, हथकड़ी सोने की हो या लोहे की - दोनों बंधन ही हैं, स्वतंत्रता के सामने दोनों एक जैसे ही हैं, बंधन ही हैं, त्यागने योग्य ही हैं।

जैन श्रावक के जीवन की सफलता की एकमात्र कसौटी, एकमात्र लक्ष्य परमात्मा बनना है अन्य कुछ नहीं।

उक्त तथ्य जान लेने के बाद, समझ में आने के बाद, स्वीकृत होने के बाद **यह कैसे संभव है कि जैन और जैनेतर लोगों की जीवनशैली एक जैसी ही हो, क्रियाकलाप एक जैसे ही बने रहें ?**

जब दोनों के लक्ष्य ही अलग-अलग हैं तो उन्हें प्राप्त करने की प्रक्रिया एक जैसी कैसे हो सकती है। तब उन दोनों का नित्यक्रम और जीवनशैली एक जैसी कैसे हो सकती है, दोनों के क्रियाकलाप समान कैसे हो सकते हैं ? उनमें तो आमूल अन्तर होना ही चाहिये, दोनों का जीवनक्रम एकदम भिन्न ही होना चाहिये।

जैनेतर लोगों के लिये तो यही योग्य है कि वे दिनरात इस जीवन को वैभवशाली बनाने में रचेपचे रहें, भोग भोगने में ही लीन रहें, यदि अन्य लोगों का भला-बुरा करने के मामले में ईश्वर का ही एकाधिकार न हो तो अपना समय उनकी (अन्य लोगों की) भलाई के कामों में व्यतीत करें, नाम और पुण्य कमायें। शेष समय अपने किये दुष्कर्मों का दुष्फल भोगने से बचने के लिये तथा शुभकर्मों का सुफल पाने के लिये प्रभुकृपा पाने की प्रक्रियास्वरूप उनकी भक्ति-पूजा में अर्पण कर दें।

इतना सब करलेने पर उनके कर्तव्यों की तो इतिश्री हो जाती है।

उक्त के विपरीत जैन लोग ऐसा कैसे कर सकते हैं?

यदि वे यही सब करने में ही उलझे रहेंगे तो संसार के संसार में ही बने रहेंगे, दु:खी ही बने रहेंगे; क्योंकि संसार में तो सुख है ही नहीं, संसार के सुखाभास तो दु:खों के ही अन्य प्रकार हैं, प्रकारान्तर हैं, उनमें तो उनकी दिलचस्पी हो नहीं सकती है, होनी ही नहीं चाहिये। तब वे परमात्मा बनने और अनन्त सुखी होने का उपक्रम कब और कैसे करेंगे ?

जिसप्रकार **अपने घर की स्थायी जीवनशैली भिन्न होती है और किसी कार्यवश बाहर जाने पर कुछ ही दिनों के लिये सराय (होटल) में ठहरने की अलग।**

अपने घर में हम अपने लिये स्थायी तौर पर सभी प्रकार की सुविधायें जुटाते हैं पर जब बाहर जाने पर **होटल में ठहरते हैं तो वहाँ उस तरह की व्यवस्थाओं में उलझकर शक्ति, श्रम और समय बर्बाद नहीं करते हैं। वहाँ तो कम से कम साधनों की मदद से अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करके, अपना काम निपटाकर जल्दी से जल्दी अपने घर लौट जाना चाहते हैं।**

जैन मान्यता के अनुसार हमारा यह मानव जीवन, यह संसार हमारा अन्तिम लक्ष्य नहीं है, यह हमारा स्थायी आवास भी नहीं है। यहाँ तो हम अपने मोक्ष पाने के लक्ष्य की ओर बढते हुये कुछ दिनों के सराय के आवास की तरह रुके हुये हैं। ऐसी अवस्था में हम अन्य लोगों की ही तरह यहाँ की व्यवस्थाओं में ही अपना सम्पूर्ण समय और शक्तियों को कैसे झोंक सकते हैं ? **हमें तो अपना आत्मकल्याण का उपक्रम करके जल्दी से जल्दी यहाँ से आगे बढ जाने का लक्ष्य रखना होगा।**

कल्पना कीजिये कि हम अपने घर में भी नहीं हों और होटल में भी नहीं; **किसी संयोगवश कारावास में ही रह रहे हों, तो हम क्या करेंगे ?**

क्या वहाँ भी इसी प्रकार दीर्घावधि योजनायें बनाने लगेंगे, व्यवस्थायें जुटाने में व्यस्त हो जायेंगे या शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से छूटने का उपक्रम करेंगे ?

जैन सिद्धांत के अनुसार हमारा यह संसार प्रवास मात्र कारागार ही तो है, जहाँ हम अपने स्वरूप को भूलने की सजा भोग रहे हैं।

ऐसे में हमें यहाँ सुविधापूर्वक टिके रहने के प्रयास करने चाहिये या इससे छूटने के उपक्रम करने चाहिये ?

क्या स्थायीतौर पर रहने की और अपनी यात्रा के दौरान थोड़े से समय के अस्थायी पड़ाव की जीवनशैली एक जैसी हो सकती है ?

नहीं न !

तब हम क्यों वही जीवन शैली अपनाते हैं जो यहाँ के स्थायी निवासियों की है, जिनके पास यहाँ से आगे बढने के लिये कोई लक्ष्य ही नहीं है।

क्यों नहीं हम एक मुक्ति के साधक की जीवन शैली अपनाते हैं ?

क्या इस विषय पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता नहीं है ?

यदि हाँ, तो कब करेंगे हम यह कार्य ?

''शुभस्य शीघ्रम्''

निश्चित ही जैन श्रावकों की जीवनशैली भिन्न होनी चाहिये। एकदम अलग, जगत की मान्यता से एकदम भिन्न, अनोखी, अद्भुत। वर्तमान में सम्पूर्ण, आकुलता रहित शांति प्रदान करने वाली और भविष्य के लिये सम्पूर्णता (परमपद) प्रदान करने वाली।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये जैन श्रावकों को अपने दिन/जीवन के कम से कम समय में अहिंसक तरीके से न्याय-नीतिपूर्वक अपनी कम से कम मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त आजीविका की व्यवस्था करके अपना शेष अधिकतम समय अपने त्रैकालिक सुख का उपाय करने (परमात्मा बनने) की साधना में व्यतीत करना चाहिये। यदि अन्य लोगों की ही तरह वह भी अपने आपको दिन-रात मात्र कमाने और भोगने में ही व्यस्त रखेगा, मात्र इसी जन्म की संभाल में उलझा रहेगा तो अनंतकाल तक के लिये आत्मकल्याण का उपक्रम कब करेगा ?

जैन श्रावक के निवृत्तिमय आत्मकल्याण के उपक्रम में लीन जीवनशैली ही श्रावकाचार कहलाती है, वही अनुकरणीय है, अनुसरणीय है, उपादेय है, एकमात्र कर्तव्य है।

मिलापचंद डांडिया अहिंसा सम्मान से सम्मानित

जयपुर : अध्यात्म अहिंसा शाकाहार एसोसिएशन (Aaशा) एवं समन्वयवाणी फाउन्डेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचंद डांडिया को 13 सितम्बर को राजस्थान जनमंच की ओर से जीव कल्याण शाकाहार व पर्यावरण संरक्षण हेतु विशिष्ट कार्य के लिये अहिंसा सम्मान 2015 से सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री त्रिलोकचंदजी अग्रवाल (अध्यक्ष जौहरी बाजार व्यापार मण्डल) ने की। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री राजेश मीणा (चैयरमेन संजीवनी ग्रुप) तथा समारोह प्रमुख श्री प्रमोद महनोत (मुख्य ट्रस्टी श्री उत्तम कल्याण ट्रस्ट) थे। समारोह के संयोजक श्री कमल लोचन ने श्री मिलापचंद डांडिया द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की तथा उनके दीर्घ जीवन की कामना की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पर्यावरणविद् गौसेवक तथा अन्य विशिष्ट समाजसेवी उपस्थित थे। Aaशा के संचालक अखिल बंसल ने श्री डांडियाजी को बधाई दी।

महाविद्यालय के छात्र पुरस्कृत

जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर में प्राकृत भारती अकादमी द्वारा दिनांक 28 अगस्त को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इसके अन्तर्गत प्राकृत प्री सर्टिफिकेट में प्रथम स्थान चर्चित जैन (90%) एवं अर्पित जैन (90%) ने प्राप्त किया, जिन्हें 1000 रुपये की राशि से पुरस्कृत किया गया। प्राकृत सर्टिफिकेट में प्रथम स्थान सौरभ जैन फूप (88.5%) ने प्राप्त किया, जिन्हें 2 हजार रुपये की राशि से पुरस्कृत किया गया।

विद्वत् परिषद् का दो दिवसीय अधिवेशन जयपुर में

जयपुर : अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 24 एवं 25 अक्टूबर को टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित है। समारोह की अध्यक्षता विद्वत् परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल करेंगे। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी का चुनाव भी सम्पन्न होगा। विद्वत् परिषद् एवं टोडरमल स्नातक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में सल्लेखना एवं समाधिमरण पर विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया गया है। सभी सदस्यों से पधारने का सानुरोध निवेदन है।

हार्दिक धन्यवाद !

स्व. श्री शांतिशरण जैन वैद्य (मैनपुरी निवासी) की दिनांक 27 सितम्बर को 15वीं पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी पुत्री रमा जैन (महावीर स्कूल) धर्मपत्नी श्री राकेशचंदजी जैन जयपुर द्वारा 40 हजार रुपये टोडरमल महाविद्यालय हेतु प्रदान किये गये, एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद !

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail : info@vitragvani.com

ब्र. हेमचंदजी कृत ज्ञानदीप पुस्तक प्रेस में

जयपुर : श्री अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा वरिष्ठ विद्वान ब्र. हेमचंदजी हेम कृत महत्वपूर्ण कृति ज्ञानदीप प्रकाशनार्थ प्रेस में दे दी गई है। लगभग 550 पृष्ठीय इस पुस्तक में आगम एवं अध्यात्म के गूढ रहस्यों की विवेचना की गई है। जो भी महानुभाव पुस्तक की कीमत कम करने में अपना सहयोग देना चाहें, वे तत्काल अखिलजी बंसल से 09929655786 पर संपर्क करें।

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2015

प्रति

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.;
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल;** प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा
जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127